इकाई–9: एक संघटित सिद्धांत के रूप में नातेदारी: पितृवंशीय, मातृवंशीय, दोहरा एवं सजातीय वंशीय (Kinship as an Organising Principle: Descent–Patrilineal, Matrilineal, Double and Cognatic Descent)

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

9.1 वंशानुक्रमण (Descent)
9.2 सारांश (Summary)
9.3 शब्दकोश (Keywords)
9.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)
9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- वंशानुक्रमण के नियम को समझना।
- वंशनुक्रम के निर्धारण की विधियों की जानकारी।

प्रस्तावना (Introduction)

आदिम एवं सरल समाजों में प्रदत्त प्रस्थिति का अधिक महत्त्व होता है। ऐसे समाजों में व्यक्ति का पद-निर्धारण, उसके अधिकार एवं कर्तव्य सम्पत्ति पर अधिकार तथा दूसरे व्यक्तियों से सम्बन्ध, आदि का प्रमुख आधार जन्मजात सम्बन्ध होते हैं। यहाँ प्राथमिक सामाजिक समूह बन्धुत्व से जुड़े रहते हैं और अधिकांशत: उनकी सदस्यता वंशानुक्रमण से निर्धारित होती है।

9.1 वंशानुक्रमण (Descent)

बन्धुत्व एवं वंशानुक्रम (Kinship and Descent) एक ही शब्द नहीं हैं। यद्यपि कई बार इनमें स्पष्ट अन्तर करना कठिन होता है। वंशानुक्रमण को परिभाषित करने के लिए सामाजिक, संस्कृतिक एवं जैविकीय आधारों का सहारा लिया गया है।

रिवर्स ने वंशानुक्रम शब्द को दो अर्थों में प्रयुक्त किया है। एक उस विधि के रूप में जिससे किसी समूह की सदस्यता का निर्णय किया जात है तथा दूसरा उन अनुरीतियों के लिए जिनके द्वारा सम्पत्ति, पदवी और अधिकार का संचारण होता है। वंशानुक्रमण को परिभाषित करते हुए **पिडिंगटन** लिखते हैं–"वंशानुक्रम के नियम वे हैं जो एक व्यक्ति की सामाजिक समूह में जन्मजात सदस्यता को नियमित करते हैं, यद्यपि इस प्रकार की सदस्यता विशिष्ट स्थितियों में गोद लेने की प्रथा द्वारा प्राप्त की जाती है।

इस प्रकार से पिडिंगटन वंशानुक्रम समूह की सदस्यता में जैविकीय और सामाजिक दोनों आधारों को सम्मिलित करते हैं। **बोहनन** के अनुसार, "जब एक विवाहित जोड़े से एक सन्तान पैदा होती है तो उसका उन दोनों से सम्बन्ध वंशानुक्रम सम्बन्ध के नाम से पुकारा जाता है।" इस परिभाषा में बोहनन ने वंशानुक्रम को माता-पिता एवं बच्चे के सम्बन्धों को प्रकट करने वाली व्यवस्था के रूप में दर्शाया है। **मरडॉक** लिखते हैं, "वंशानुक्रम पूर्णत: एक सांस्कृतिक सिद्धान्त की ओर संकेत करता है। जिसमें एक व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से एक विशिष्ट" रक्त सम्बन्ध बन्धुत्व से जोड़ा जाता है। फोरटेस के अनुसार, "एक वंशानुक्रम समूह व्यक्तियों की ऐसी व्यवस्था है जो वैध सामाजिक एवं वैयक्ति उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होती है।"

रिवर्स ने 1907 में ब्रिटिश एसोसिएशन के समक्ष वंशानुक्रम की परिभाषा इस प्रकार से दी है, "वंशानुक्रम का तात्पर्य ऐसे समूह से है जिसकी सदस्यता जन्मजात है, जहाँ लोग यह निश्चित कर सकते हैं कि वे माता-पिता में से किस पक्ष में हैं।"

रैडक्लिफ ब्राउन वंशानुक्रम को एक कानूनी अवधारणा (Jural Concept) मानते हैं।

नोट्स वंशानुक्रम वह जैविकीय एवं सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था है जो सन्तानों को उनके माता-पिता एवं पूर्वजों से जोड़ती है। इसमें जन्म-गत अथवा रक्त-सम्बन्धियों को ही सम्मिलित किया जाता है जो वास्तविक तथा काल्पनिक सम्बन्धों में बंधे होते हैं और ये सम्बन्ध समाज द्वारा मान्य होते हैं।

वंशानुक्रम निर्धारण की विधियाँ (Methods of Reckoning Descent)

विभिन्न समाजों में वंशानुक्रम निर्धारण की अलग-अलग विधियाँ प्रचलित हैं जो तीन पक्षों से सम्बन्धित हैं–1. पितृपक्ष, 2. मातृपक्ष 3. द्वि-पक्ष।

जब हम वंशानुक्रम की गणना पिता एवं माता में से केवल एक पक्ष के आधार पर ही करते हैं तो यह गणना **एकपक्षीय वंशानुक्रम** (Unilateral Descent) कहलाती है। इस एकपक्षीय वंशानुक्रम के दो भेद हैं–एक में गणना पितृपक्ष से की जाती है, दूसरे में मातृपक्ष से। पितृपक्ष में वंशानुक्रम गणना पुरुष की ओर से की जाती है अर्थात् जब एक व्यक्ति का वंशानुक्रम उसके पिता पक्ष से गिना जाता है तो उसे **पितृवंशीय वंशानुक्रम (Patrilineal Descent)** कहते हैं। पितृवंशीय वंशानुक्रम का सर्वप्रथम प्रयोग रोमवासियों ने किया था क्योंकि उनके यहाँ स्त्रियों के द्वारा वंशानुक्रम निश्चित करने के लिए कोई शब्द नहीं था। पितृवंशीय वंशानुक्रम हमें प्राचीन रोम, चीन तथा पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका के पशुपालक समाजों में देखने को मिलते हैं। पितृवंशीय वंशानुक्रम से सम्बन्धित सभी बन्धुओं को **पितृ-बन्धु** (Agnates) कहते हैं।

जब एक व्यक्ति की वंश गणना स्त्री पक्ष अर्थात् माता की ओर से की जाती है। तो उसे **मातृवंशीय वंशानुक्रम (Matrilineal Descent)** कहते हैं तथा इस प्रकार से सम्बन्धित सभी बन्धुओं को **सहोदर बन्धु (Utarine)**

नोट

कहते हैं। एक व्यक्ति के रक्त से सम्बन्धित सभी रिश्तेदार जिसमें पिता एवं माता दोनों पक्षों के सम्बन्धी होते हैं, **मातृ बन्धु (Cognates)** कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, एक वयक्ति के दादा-दादी, चेचेरे भाई-बहिन जो कि पितृपक्षीय हैं एवं नाना-नानी, मामा-मौसी जो कि पितृपक्षीय हैं, मिलकर मातृ बन्धु कहलायेंगे। मातृपक्षीय वंशानुक्रम भारत में गारो, खासी, नायर, अमरीकन, इण्डियन, आस्ट्रेलिया की जनजातियों, इण्डोनेशिया, मलाया, केन्द्रीय अफ्रीका की बांटू जनजाति तथा घाना की अकान जनजाति में पाया जाता है।

कई बार वंश का निर्धारण माता अथवा पिता में से किसी एक की अपेक्षा दोनों पक्षों से होता है। तो ऐसे वंशानुक्रम को **द्वि-पक्षीय वंशानुक्रम (Bilateral Descent)** कहते हैं। जब वंशानुक्रम माता अथवा पिता में से किसी भी एक से गिना जा सकता है तो इसे **संदिग्ध पक्षीय वंशानुक्रम (Ambilateral Descent)** कहते हैं। ऐसी स्थिति में यह पूरा निश्चित नहीं होता है कि गण्ना किस पक्ष से की जोयगी। इसीलिए ही इसे संदिग्ध पक्षीय वंशानुक्रम कहा जाता है। इस प्रकार का वंशानुक्रम निर्धारण न्यूजीलैण्ड के हापु माओरियों (Hapu maories) में पाया जाता है।

एक परिवार के बच्चों जैसे, भाई-भाई, भाई-बहिन, आदि के सम्बन्धों को बन्धुत्व व्यवस्था में **सम-पार्ईव बन्धु (Collateral Kin)** कहते हैं। इस प्रकार एक ही माता-पिता के बच्चे सम-पार्श्व बन्धु हैं। लीच का मत है कि जब एक ही वंशानुक्रम समूह के सदस्य एक स्थान पर एक-दूसरे के निकट रहते हों तो उसे **स्थानीय वंशानुक्रम समूह (Local Descent Group)** कहते हैं। **फोरटेस** ने वंशानुक्रम और पितृत्व (Descent and filiation) में भेद किया है। किसी व्यक्ति का अपने माता-पिता से सम्बन्ध पितृत्व या पुत्रत्व (Filiation) कहलाता है, जबकि उसका अपने पूर्वजों से सम्बन्ध वंशानुक्रम कहलाता है। इस प्रकार वंशानुक्रम में पितृत्व की अपेक्षा पीढ़ियों की गहराई होती है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

1. एक व्यक्ति के दादा-दादी, चचेरे भाई-बहन जो .... हैं।
2. माता अथवा पिता में से किसी एक की अपेक्षा दोनों पक्ष से होता है, तो ऐसे वंशानुक्रम को .... कहते हैं।
3. एक परिवार के बच्चों जैसे, भाई-भाई, भाई-बहिन, आदि के संबंधों को बधुत्व व्यवस्था में .... कहते हैं।

वंशानुक्रम के प्रकार्य (Functions of Descent)

अधिकांश आदिम एवं पूर्व औद्योगिक समाजों में वंशानुक्रम का महत्त्व बन्धुओं के विस्तार को बताने की दृष्टि से नहीं है, वरन् इसके आधार पर यह भी निर्धारित किया जाता है कि सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का संगठन किन-किन पक्षों में हो सकता है और किन में नहीं? फोरटेस और ब्राउन का मत है कि वंशानुक्रम के आधार पर ही पदाधिकार एवं सम्पत्ति में उत्तराधिकार तय किया जाता है। आक्रमण, सुरक्षा, धार्मिक कार्य, दाह-संस्कार, निकटाभिगमन, निवास, आदि विभिन्न प्रयोजनों में कौन-कौन से सम्बन्धी सम्मिलित किये जायेंगे और कौन से नहीं, यह भी वंशानुक्रम से तय किया जाता है। वंशानुक्रम की जानकारी राजनीतिक एंव कानूनी, बाह्य एवं घरेलू पक्षों को समझने के लिए आवश्यक है। इसके आधार पर ही स्त्री की प्रजनन शक्ति एवं यौन सम्बन्धी अधिकारों को नियमित किया जाता है। व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण, नातेदारी शब्दों एवं नियमों के प्रयोग को भी वंशानुक्रम के आधार पर तय किया जाता है। इसी आधार पर भविष्य में जन्म लेने वाली सन्तानों को एक समूह में जोड़ा जाता है।

फोरटेस का मत है कि वंशानुक्रम व्यक्ति के सम्बन्ध एवं वर्गीकरण को निश्चित करता है तथा उसके सामाजिक जीवन को नियमित करता है। उनकी मान्यता है कि वंशानुक्रम और पितृत्व व्यक्ति की सामाजिक भूमिका एवं पद, अधिकार एवं दायित्व को उसी प्रकार से तय करते हैं, जिस प्रकार से विलिंग सहोदर विवाह (Cross Cousin Marriage) में वे व्यक्ति के लिए पति अथवा पत्नी का चयन करती हैं। **बोहनन** का मत है कि वंशानुक्रम समूह

अपने सदस्यों में नातेदारी नैतिकता पैदा करता है। यह न्यायिक वंशानुक्रम को नियतिम बनाता है, विवाह पर नियन्त्रण रखता है तथा समाज में पारस्परिक सहायता को बढ़ावा देता है। यह पद संचरण, राजनीति तथा सरकार से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण पक्षों को तय करता है। इस कथन से वंशानुक्रम का महत्त्व स्वत: ही प्रकट हो जाता है।

9.2 सारांश (Summary)

- रिवर्स के अनुसार "वंशानुक्रम का तात्पर्य ऐसे समूह से है जिसकी सदस्यता जन्मजात है। जहाँ लोग यह निश्चित कर सकते हैं कि वे माता-पिता में से किस पक्ष में हैं।"
- विभिन्न समाजों में वंशानुक्रम की अलग-अलग विधियाँ प्रचलित हैं। जो प्राय: तीन पक्षों से संबंधित हैं–पितृपक्ष, मातृपक्ष तथा द्वि-पक्ष।
- वंशानुक्रम के आधार पर ही पदाधिकार एवं संपत्ति में उत्तराधिकार तय किया जाता है।
- नातेदारी शब्दों एवं नियमों के प्रयोग को भी वंशानुक्रम के आधार पर तय किया जाता है।

9.3 शब्दकोश (Keywords)

1. **वैकल्पिक वक्र वंशक्रम (Alternate descent)**–जब पुरुष से उसकी पुत्रियों एवं महिला से उसके पुत्रों को वंशक्रम की सदस्यता मिलती है, तब इसे वैकल्पिक या वक्र वंशानुक्रम कहते हैं। यह वंशक्रम व्यवस्था बहुत कम पाई जाती है।
2. **वंशानुक्रमण (Descent)**–वंशानुक्रम का तात्पर्य ऐसे समूह से है जिसकी सदस्यता जन्मजात है।

9.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. वंशानुक्रम का अर्थ क्या है?
2. वंशानुक्रम निर्धारण की विधियाँ बताएँ।
3. वंशानुक्रम के कार्यों का वर्णन करें।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. पितृपक्षीय
2. द्वि-पक्षीय वंशानुक्रम
3. सम-पार्श्व बन्धु।

9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. समाजशास्त्र विश्वकोश–हरिकृष्ण रावत।
2. सोलह संस्कार–स्वामी अवधेशन, मनोज पब्लिकेशन।